an>

Title: Need to take strict action against the hospitals not giving medical facilities to poors.

श्री रमेश बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली) : मैं आपके माध्यम से मानव जीवन से जुड़ी हुई एक गंभीर समस्या को उठाना चाहता हूं। दिल्ली के अंदर और दिल्ली के बाहर भी सरकारी अस्पतालों की जमीन आप एक रुपये की लीज पर बड़े-बड़े अस्पतालों को देते हैं। जब वहां पेशेंट आते हैं तो पहले उनसे पैसा जमा कराने की बात की जाती है, चाहे इमैंजेसी हो या हार्ट पेशेंट हो। 16 फरवरी को मूलचंद अस्पताल का एक उदाहरण सामने आया। एक पेशेंट जो 10 बजे आ गया था, लेकिन 12 बजे तक उसका इलाज नहीं किया गया क्योंकि वह 2 लाख रुपये जमा नहीं करा पा रहा था, जबकि उसे सरकारी अस्पताल ने रेफर किया था। उस पेशेंट की मौत हो गई। पुलिस रिपोर्ट होने के बाद जब उनसे पूछा गया कि आपने पेशेंट को एडमिट क्यों नहीं किया, फर्स्ट एड क्यों नहीं दिया? तब उन्होंने कहा कि पेशेंट अभी आया है, क्योंकि तब तक पुलिस भी आ गई थी। जब उनसे सी.सी.टी.वी. कैमरे में अराइवल दिखाने की बात कही गई तो उन्होंने कहा कि सी.सी.टी.वी. कैमरे काम नहीं कर रहे हैं। मैं आपके माध्यम से मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया और दिल्ली मेडिकल काउंसिल से निवेदन करता हूं, इन अस्पतालों को एक-एक रुपये की लीज पर जमीनें दी गई हैं। जब गरीब लोग वहां इलाज कराने जाते हैं तो वे फर्स्ट एड तक उपलब्ध नहीं करा पाते। उन अस्पतालों के खिलाफ एक्शन लिया जाए। इन अस्पतालों में यह सुनिश्चित किया जाए कि गरीब लोगों को भी फर्स्ट एड दिया जाए और पहले उनको एडमिट करें बाद में उनसे पैसे लें। ऐसे मैक्स अस्पताल, मूलचंद अस्पताल, मैक्सवेल अस्पताल, अपोलो अस्पताल आदि सभी की ये समस्याएं हैं। जिन पैशेंट्स की मृत्यु हो गयी है, उनके नाम भी मेरे पास हैं। निखिल गोडना की मदर एडमिट रही। उनकी डेथ हो गयी। अस्पतालों में कई-कई पैकेज दिये जाते हैं और उन पैकेज के नाम पर एडमिट कर लेते हैं। लोग बाद में पैसे जमा नहीं करा पाते, तो उन्हें धमकी देते हैं कि तुम्हारा पैशेंट आई.सी.यू. में है। आप पांच लाख रुपये जमा करा दीजिए, वर्ना तुम्हारा पैशेंट मर जायेगा। मेरा निवेदन है कि इन अस्पतालों की इंक्वायरी करायी जाये।

उपाध्यक्ष महोदया, आपने मुझे इस सेंसटिव इश्यू पर बोलने का मौका दिया, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।